ISSN 2395-051X

जयप्रकाश नारायण – समाजवाद से सर्वोदय और समग्र क्रान्ति की ओर एक वैचारिक कदम

डॉ. सुनीता त्रिपाठी

प्राध्यापक, राजनीति विज्ञान

शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर, उत्कृष्टता महाविद्यालय, सागर (म.प्र.)

सारांश -

जयप्रकाश नारायण की समाजवादी विचारधारा मार्क्सवाद लोकतांत्रिक समाजवाद और अन्त में सर्वोदय के रूप में परिणित हुआ। जयप्रकाश नारायण ने समाजवाद से सर्वोदय की ओर जीवन इस नये मोड़ की औपचारिक घोषणा 1954 में जीवनदान के संकल्प में की थी। किन्तु इस नयी यात्रा का प्रारम्भ भारतीय स्वतंत्रता की प्राप्ति से ही हो चुका था। महात्मा गांधी ने भारत को स्वतंत्रता की मंजिल तक पहुंचाया, किन्तु स्वतः सत्ता से दूर रहे। उन्होंने कांग्रेस को भंग कर उसे एक लोक सेवा संघ के रूप में परिवर्तित करने का निर्देश दिया था। किन्तु स्वतंत्रता के पश्चात सत्ता की राजनीति का जो स्वरूप भारत में उपस्थित हुआ वह जयप्रकाश नारायण को राजनीति से दूर करने की प्रक्रिया का प्रारम्भ था। गांधी जी के विचारों के नजदीक पहुंचने का एक-एक उपक्रम था भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन काल।

मुख्य शब्द - समाजवाद, सर्वोदय, समग्र क्रान्ति

जयप्रकाश नारायण के दिमाग में समाजवाद, सर्वोदय, क्रांति किसी कोने में विद्यमान थी, किन्तु जयप्रकाश नारायण की इस विचार शक्ति, स्वराज्य प्राप्ति के गांधीवादी तरीके ने एक बुनियादी प्रहार किया था। इस काल में ही उन्होंने यह पाया कि कांग्रेस और समाजवादी दल का सहयोग सम्भव नहीं है। राजनीतिक मूल्यों का नैतिकता से सम्बन्ध टूटता जा रहा है और स्वतः 1952 के समाजवादी दल की पराजय के कारण अपने दल के सहयोगियों के सन्देह के शिकार बन चुके थे।

इस बीच आचार्य विनोबा भावे ने भूदान यज्ञ का अनुष्ठान किया। तेलंगाना की हिंसा को शान्त करते हुए जून 1952 में आचार्य विनोबा भावे ने उत्तरप्रदेश में बांधा में अपना अभियान प्रारम्भ किया तो जयप्रकाश नारायण के मानस में समाजवाद की एक नई तस्वीर सर्वोदय के रूप में उभरकर सामने आयी। गांधी और भावे के इस नये शिष्य जयप्रकाश नारायण ने जून 1952 में 21 दिन के आत्म शुद्धि उपवास में नैतिकता और सत्याग्रह का एक नया आशा दीप प्राप्त किया। जयप्रकाश नारायण के इस कथन में जयप्रकाश नारायण की समाजवादी यात्रा का सर्वोदय में संक्रमण स्पष्ट होता है। स्वतंत्रता, समता एवं बन्धुत्व के जिस पुराने संकेत-दीपों में मेरा जीवन पथ अलौकिक किया था और मुझे लोकतांत्रिक समाजवाद तक पहुंचाया था, उन्होंने ही मुझे मार्ग

के इस मोड़ पर से आगे जाने के लिए प्रेरित किया। कुछ वर्ष पूर्व मेरे सामने यह स्पष्ट हो गया कि आज जिसे हम समाजवाद समझते हैं, वह मनुष्य जाति को स्वतंत्रता, समता, मातृत्व एवं शांति के उच्च लक्ष्यों तक नहीं पहुंचा पायेगा। मेरा विश्वास है कि यदि समाजवाद सर्वोदय में परिवर्तित नहीं होता तो ये लक्ष्य उसकी पहुंच के बाहर ही रहेंगे।

महात्मा गांधी ने सर्वोदय शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग किया था, जो जॉन रस्किन के 'अर्न टू दि लास्ट' नामक ग्रन्थ के शीर्षक का हिन्दी अनुवाद कहा जा सकता है। सर्वोदय को वे श्रम के अधिकतम लोगों के अधिकतम सुख के सिद्धान्त के स्थान पर सभा व्यक्तियों के अधिकतम सुख के सिद्धान्त का प्रवर्तक है। इसका तात्पर्य है कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने विकास की पूर्णतः सुविधा प्राप्त है। समाजवाद, साम्यवाद, मार्क्सवाद या समाजवाद के विभिन्न स्वरूपों में मजदूर वर्ग के हित को ही अधिक महत्व दिया गया है। पूंजीवाद का विनाश और मजदूर वर्ग जयप्रकाश नारायण की सम्पूर्ण क्रान्ति, राज्य क्रान्ति से भिन्न है। यह हिंसात्मक क्रान्ति नहीं है। यह केवल सत्ता की क्रांति नहीं है, बल्कि सम्पूर्ण समाज के व्यवस्था परिवर्तन और व्यक्ति के अपने जीवन की क्रान्ति है।

जयप्रकाश नारायण के चिन्तन में क्रान्ति की धारणा का क्रमिक विकास -

जयप्रकाश नारायण एक क्रांतिवादी और क्रांति शोधक थे। उनके सम्पूर्ण क्रान्ति का विचार कोई आकस्मिक संयोग नहीं था। बल्कि जयप्रकाश नारायण के मस्तिष्क में लगातार पलता हुआ क्रांन्ति का विचार अपने प्रौढ़ रूप में संपूर्ण क्रान्ति के विचार में विकसित हुआ है। अतः जयप्रकाश नारायण की क्रांति संबंधी धारणा में आरोह विद्यमान है। जयप्रकाश नारायण शब्दों में क्रांति भी पर्वतारोहण होती है। क्रांति का प्रारम्भिक विचार जयप्रकाश नारायण के विद्यार्थी मन में पटना के शिक्षण काल में ही क्रान्तिकारी आन्दोलन से प्रेरित हुआ था। जिसने जयप्रकाश नारायण को राष्ट्रीय स्वतंत्रता के ज्वार में उतार दिया था। जयप्रकाश नारायण के शब्दों में क्रांति का क्रीड़ा तो मेरे दिमाग में तभी घुस गया था, जब मैं हाईस्कूल में पढ़ता था। उस वक्त यह क्रीड़ा था राष्ट्रीय क्रान्ति का, राष्ट्रीय स्वतंत्रता का। जयप्रकाश नारायण ने स्कूल जीवन में ही राष्ट्रीय स्वतंत्रता के लिए उत्सर्ग करने वाले क्रांतिकारियों में अपने जीवन का मिशन पाया था, किन्तु इसी काल में भारत में चल रहे राष्ट्रीय आन्दोलन में दक्षिण अफ्रीका के सत्याग्रह प्रयोग कर लौटने वाले महात्मा गांधी जी ने जिस असहयोग आन्दोलन को जन्म दिया जयप्रकाश नारायण ने उस आन्दोलन में शिक्षा का क्रम छोड़कर एक वर्ष आठ माह तक भाग लिया। इस प्रारम्भिक दौर में ही यह स्पष्ट है कि जयप्रकाश नारायण ने मिशन को महत्व दिया। साधन को नहीं। इसलिये राष्ट्रीय स्वतंत्रता की प्राप्ति में हिंसक क्रांति और असहयोग आन्दोलन दोनों में जयप्रकाश नारायण के लिए आकर्षण था।

5 जून 1874 की पटना के गांधी मैदान की विशाल सभा में पहली बार जयप्रकाश नारायण के मुंह से सम्पूर्ण क्रान्ति शब्द सहज ही निकल पड़ा था, किन्तु इस शब्द को बिहार छात्र आन्दोलन की दस-बारह मांगों की सीमा में देखना उचित नहीं होगा। जयप्रकाश नारायण ने स्वतः यह स्पष्ट किया था कि यह तो केवल संपूर्ण क्रांति की शुरूआत है। वास्तव में जयप्रकाश नारायण के शब्दों में ही सम्पूर्ण क्रान्ति के उद्देश्य बहुत दूरगामी

हैं। भारतीय लोकतंत्र के वास्तविक तथा सुदृढ़ बनाना, जनता का राच्चा राज्य कायम करना, समाज से अन्याय, शोषण आदि का अंत करना एक नैतिक संस्कृति तथा शैक्षणिक क्रान्ति करना, नया बिहार तथा नया भारत बनाना है। सम्पूर्ण क्रान्ति युगधर्म की पुकार है। समाज और व्यक्ति के जीवन के हर पहलुओं में क्रांतिकारी परिवर्तन हो और व्यक्ति का और समाज का विकास हो। दोनों ऊंचे उठे, केवल शासन बदले, इतना ही नहीं, व्यक्ति और समाज भी बदले। यही संपूर्ण क्रांति है। इसे ही समग्र क्रान्ति कहा जा सकता है और यदि इसमें पूर्णतः को जोड़ दिया जाय तो इसे ही सम्पूर्ण समग्र क्रान्ति कहा जा सकता है। जयप्रकाश नारायण की सम्पूर्ण क्रान्ति की धारणा में गद्दी या सत्ता हथियाने की लड़ाई नहीं है, बल्कि व्यवस्था परिवर्तन, प्रक्रिया परिवर्तन और नव-निर्माण की बात है। यह संपूर्ण क्रांति समस्या जनता की क्रांति है। इसका मोर्चा राजधानी, हर गांव, हर शहर, हर कार्यालय, विद्यालय और कारखाने, यहां तक कि हर परिवार में हो। जहां-तहां लोग समूहों में रहते और काम करते हैं, ऐसी सब जगह लड़ाई का मोर्चा है। यह मोर्चा हर व्यक्ति के अपने अन्दर भी है। यह पुराने और गलत संस्कारों से लड़ना भी है। इस उद्देश्य से एक नया समाज बनाना है। इसलिए सरकार समाज, शिक्षा, चुनाव, बाजार और विकास की योजना हर चीज में हम परिवर्तन चाहते हैं। बेकारी, मंहगाई, दहेज, छुआछूत, ऊंच-नीच, स्वार्थ, सबके विरुद्ध यह क्रांति है, सहयोग और सामाजिक न्याय के लिए भ्रष्टाचार मिटाने के लिए। जयप्रकाश नारायण ने ''मेरी जेल डायरी'' में संपूर्ण क्रांति का व्यवस्थित स्वरूप प्रस्तुत करने का प्रयास किया है, जिसके अनुसार संपूर्ण क्रांति में सात क्रांतियों का मिश्रण है : सामाजिक क्रान्ति, आर्थिक क्रान्ति, राजनैतिक क्रान्ति, सांस्कृतिक क्रांन्ति, सैद्धान्तिक क्रांति, बौद्धिक-शैक्षणिक क्रांति, नैतिक क्रान्ति। जयप्रकाश नारायण इन सात क्रांतियों को कठोर विभाजन के रूप में स्वीकार नहीं करते। उनमें संख्या कम या अधिक हो सकती है।

जैसे सांस्कृतिक क्रान्ति में ही शैक्षणिक और सैद्धान्तिक क्रान्ति को सम्मिलित किया जा सकता है। इसी प्रकार यदि मार्क्सवादी दृष्टि से सामाजिक क्रान्ति की व्याख्या की जाय तो इसमें राजनैतिक और आर्थिक क्रान्ति भी सम्मिलित है। इसी प्रकार इन क्रान्तियों को अन्य कई टुकड़ों में बांटा जा सकता है, जैसे आर्थिक क्रान्ति, औद्योगिक क्रान्ति, कृषि क्रान्ति, या तकनीकी क्रांति या नैतिक क्रांति में नैतिक और आध्यात्मिक क्रांति के विभाजन हो सकते हैं। समग्र क्रांति की उपरोक्त धारणा से ही कि जयप्रकाश नारायण जी का समाजवाद से सर्वोदय तथा समग्र क्रान्ति की अवधारणा है।

संदर्भ -

1. नारायण जयप्रकाश समाजवाद से सर्वोदय की ओर सर्वसेवा संघ प्रकाशन वाराणसी, 1954
2. नारायण जयप्रकाश मेरी विचार यात्रा, लोक भारती प्रकाशन नई दिल्ली, 1942, पृ.सं. 20-22
3. मध्यप्रदेश में सर्वोदय आन्दोलन सर्व सेवा संघ प्रकाशन वाराणसी
4. आचार्य राममूर्ति - वर्ग संघर्ष मेरी एक कल्पना जय प्रकाश नारायण, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, 1954 पृ. 10
5. नारायण जयप्रकाश समाजवादी अवधारणा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 1954